जेठ–बैशाख गेंहू की मगोसार

– जगमोहन चोपता

बराली एक्सप्रेस का सुहाना सफर कई सारे खट्टे–मीठे किस्सों को समेटते हुए चल रहा है। इस बार बराली एक्सप्रेस जब पहाड़ के सीढ़ीदार खेतों से होकर गुजरी तो गेहूं की कटाई के बाद के दृश्य दिखे। आइये सुनते हैं गेहूं की कटाई के दृश्यों से जुड़े कुछ किस्से–

गेहूं कटाई के बाद मगोसार पड़ जाती। इस दौरान खेत खाली हो जाते। खेत के भिट्टों पर कुणजे और अल्मोड़ा की बढ़ी हुई झाड़ियों और भीमल और खड़ीक के पेड़ों पर पक्षियों के खूब सारे घोंसले दिखने शुरू हो जाते। खेतों में मवेशियों की आमद से पूरी सार (खेत) चरागाह मे तब्दील हो जाते। नये–नये बछड़े पहली बार गोशालाओं से बाहर आते हैं। उनके लिये यह पूरा परिदृश्य नया और उत्साहित करने वाला होता। मगोसार उनके लिये एक तरह का चरागाहों में जाने की पहली ट्रेनिंग जैसी होती। वे खाली खेतों में खूब दौड़ लगाते। कभी किसी बड़े बैल से सींग लड़ाते तो धकियाये जाने पर पूरे उत्साह से दौड़ते–भागते। एक–दो दिनों तक चलने वाली उनकी भागदौड़ धीरे–धीरे कम होती। करीब महीने भर चलने वाला यह क्रम उनको धीरे–धीरे पहाड़ के दुर्गम चरागाहों में चरने के लिये अभ्यस्त बनाता। इसी दौरान बौणों (बछड़े) की जोड़ी को धीरे–धीरे हल लगाने की ट्रेनिंग भी शुरू हो जाती।

गायों के साथ आये बच्चे मवेशियों को लड़ने के लिये उकसाते। मगोसार में सबसे लड़ाकू बैल, गाय या भैंस का चिन्हांकन भी हो जाता। यह सिलसिला हर साल चलता रहता। हर बार कोई न कोई नया जानवर लड़ाकू का खिताब ले जाता। मवेशियों की लड़ाई में बच्चे उत्साहित होकर चिल्लाते। ऐसे में लड़ने वाले जानवर और ताव में आते और जोरदार तरीके से घुर्राते हुए सींग चलाते। बच्चों का शोर सुन बैलों के मालिक दूर से ही बच्चों को गाली देते हुए भगाते और इस लड़ाई को रोकते। लेकिन बच्चे कहां मानने वाले वे मौका पाकर फिर से इस अधूरी लड़ाई को अंजाम देते।

जानवरों की इस लड़ाई के साथ ही कुछ उत्सुक बच्चे झाड़ियों और पेड़ों में ताकाझांकी करते। वे चिड़ियों के घोंसले देखने के साथ ही उसमें रंग–बिरंगे अण्डों को देखकर खूब खुश होते। छोटू और उसके साथी पूरी सार में कितने घोंसले देखे, किन घोंसलों में कितने अण्डे दिखे सबका हिसाब रखते। और फिर अपने साथियों को गर्व के साथ बताते कि उन्होंने इतने घोंसले देखे हैं। घोंसलों में अण्डों को देखने की ताकाझांकी में मजाल है कि कोई बच्चा अण्डों या घोंसले पर हाथ लगा दे।

बड़ों द्वारा घर में किसी चिड़िया के अण्डे या घोंसला छूने

को पाप माना जाता। यदि कोई अण्डे को छू लेता या तोड़ देता है तो उसके कान पक जायेंगे ऐसी अफवाह बड़ों द्वारा बच्चों के मन में भरी गई थी। इसी डर की वजह से बच्चे कभी भी घोंसलों को नुकसान नहीं पहुंचाते। वे बस दूर से ताकाझांकी कर अपने मतलब की गिनती कर लेते हैं। हालांकि छोटू और उसके दोस्त जानते हैं कि अण्डों या घोंसले के साथ छेड़छाड़ करने पर चिड़ियां घोंसला बदल देती हैं।

प्रकृति के संरक्षण को लेकर इस तरह के डर बनाने के पीछे गांवों में प्रकृति में अन्य जीवों के जीवन को संरक्षित करने की लोक परम्पराएं बहुत कारगर होती हैं। हालांकि बच्चों को यदि सही संदर्भों में समझा दिया जाय तो वे और बेहतर तरीके से संवेदनशील हो सकते हैं लेकिन समाज में चीजों को रखने और बरतने के बहुत से तरीके इसी तरह के दिखते हैं।

चिड़ियों के घोंसले देखने में कौवा और घुघुते के घोंसले का पता लगाना सबसे आसान होता। क्योंकि ये दोनों ही चिड़ियां लकड़ी की कुछ पतली डंडियों से किसी टहनी पर आड़े तिरछे रखकर अपना घोंसला बनाती जो बहुत ही जल्दी दिखाई दे जाता। घुघते के दो अण्डे को लेकर भी बच्चों में मान्यता थी कि घुघते के दो अण्डों में से एक ही अण्डे से बच्चा निकलता है दूसरे अण्डे को वह भगवान के लिये छोड़ देता है। हालांकि उनके घोंसलों में दो बच्चों को चीं–चीं करते हुए छोटू ने कई–कई घोंसलों में देखा था।

घोंसलों को देखने के इस खेल में अनोखे किस्म का व्यापार भी चलता था। कुछ बच्चे दूसरे बच्चों को घोंसले बताने के एवज में खाने की चीजें मांगते। हालांकि ज्यादातर बार ऐसा होता कि छोटू अपने दोस्त को जितने घोंसले दिखाता बदलते में उसके दोस्त को भी उतने घोंसले दिखाने पड़ते। ऐसे में फायदा यह होता कि दोनों ही अब पहले से ज्यादा घोंसलों को देख पाते।

घोंसलों में सबसे मजेदार पितपिनोड़ी (बबूना) का घोसला होता। जो ज्यादातर भ्योन की दो पत्तियों को आपस में जोड़कर बनाता। छोटी–सी चिड़िया की इस कुशल कारीगरी को देखकर बच्चे मोहित हो जाते। उसके हरे–हरे अण्डे बच्चों को खूब भाते। कई बार घोंसलों को देखने का शौक सनक तक बन जाता। तोते के घोंसले बड़े–बड़े पेड़ों पर होते उनमें चढ़ना हर बच्चे के बस की बात नहीं होती। छोटू और उनके साथी इस खतरनाक खेल को अंजाम देकर घोंसला देखने जाते। कई बार तो तोतों का बीड़ा उन पर हमला भी कर देते। लम्पुछिया के घोंसले भी बड़े–बड़े पेड़ों पर ही होते हैं। उनकी लम्बी पूंछ का रंग इतना अच्छा लगता है कि बच्चे उनके घोंसलों को देखने के लिये खूब लालायित रहते हैं।

ज्यादातर चिड़ियां अपना घोंसला हर बार बदल देती है। वे हर बार नई–नई जगहों पर घोंसले बनाती रहती। बस लम्मपुछिया, तोते और कभी–कभी घुघते भी हर साल अपने घोंसले को एक ही जगह बनाते। ऐसे में उनको सभी बच्चे देख लेते। तोते पेड़ की टहनी के बजाय कोटर में अपना घोंसला बनाना पसंद करते। वहीं जंगली मुर्गी और तितर किसी दीवार की ओट या भिटटे पर ही घोंसला बनाते। उनके घोंसले के बाहर खूब सारी घास–फूस उगने के कारण उसको देखना बड़ा कठिन होता।

अण्डों के रंग और आकार में भी खूब विविधता रहती। पितपिनोड़ी के अण्डे सबसे छोटे तो तीतर और जंगली मुर्गी के अण्डे सबसे बड़े होते। ऐसे ही घोंसलो में कुछ पक्षियों के घोसले जहां बहुत ही सुन्दर तरीके से बनाये होते वहीं घुघते, कौवे और लम्पुछिया के घोंसले बहुत ही बेतरतीब तरीके से बने होते।

खेतों में एक माह की मगोसार खत्म होते होते इन घोंसलों से भी चिड़ियों के बच्चों का उड़ना शुरू हो जाता। धीरे–धीरे सारे घोसले रीते हो जाते। कई घोंसलों पर जाले पड़ जाते। गांव के लोग भी खेतों के किनारे के झाड़–झंखाड़ को भी तभी काटना शुरू करते जब उनमें से चिड़ियों के बच्चे उड़ चुके हो। खेती की इस प्रक्रिया में फसल, जानवर, अन्य जीवों के साथ का यह सामंजस्य बहुत ही अद्भुत होता। किसान जानता है कि चिड़िया उनके खेतों में अनाज के नुकसान के बदले खूब सारे कीट–पतंगों को खाती हैं जो कहीं न कहीं उनकी फसल के लिये लाभदायक होता है।

गर्मी की छुट्टियों के बाद स्कूल में जानवरों की लड़ाई और पक्षियों के घोंसलों को लेकर किस्से कहानियों की बाढ़ आ जाती। जितने मुंह उतनी कहानियां। इण्टरवल होते ही बच्चे अपने–अपने किस्सों को सुनाने में जुट पड़ते। बच्चों की इस टोली में कहानियों को सुनाने का ढंग और किस कहानी को सुनाना है का चयन ही वहां टिके रहने की कसौटी होता। बड़े बच्चों से किस्से सुनते–सुनते धीरे ही सही लेकिन छोटू और उसके दोस्त भी किस्सागोई का हुनर सीख रहे थे।

(मगोसार– गेहूं की कटाई के बाद के खाली खेत)

(लेखक अज़ीम प्रेमजी फाउंडेशन चमोली, उत्तराखण्ड से जुड़े हैं)